म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया, सब मिल दर्शन कर लो।
बार-बार आना मुश्किल है भाव भक्ति उर भर लो, हाँ....।टेक।।

हाथ कमंडलु काठ को पीछी पंख मयूर।
विषय वास आरम्भ सब परिग्रह से हैं दूर।।
श्री वीतराग-विज्ञानी का कोई ज्ञान हिया विच धर लो, हाँ...।।१।।

एक बार करपात्र में अन्तराय अघ टाल।
अल्प-अशन लें हो खड़े, नीरस-सरस सम्हाल।।
ऐसे मुनि मारग उत्तम धारी, तिनके चरण पकड़ लो, हाँ...।।२।।

चार गति दु:ख से डरी, आत्म स्वरूप को ध्याय।
पुण्य पाप से दूर हो ज्ञान गुफा में आय।।
सौभाग्य तरण तारण मुनिवर के तारण चरण पकड़ लो, हाँ..।।३।।